

सद् आदर्शों से परिपूर्ण संस्कृति

*डॉ. यशस्पति झा

कवि चाहे अतीत की कल्पना करे अथवा भविष्य का निर्माण करे उसे अपनी भावना की मूल प्रेरणा अपने ही समाज से मिलती है। हरिऔध जी एवं गुप्त जी को यदि अव्यावहारिक हासोन्मुखी रूढ़ियों में जकड़ा हुआ दुर्दशा को प्राप्त समाज न दीखता तो वे भारतीय संस्कृति की व्यावहारिक, वैज्ञानिक और उत्थान्मुखी व्याख्या करने के लिए एवं आदर्शों के प्रकटीकरण के लिए प्रिय प्रवास और साकेत की रचना न कर पाते। वस्तुतः प्रिय प्रयास और साकेत में सामाजिक आदर्शों का अंकन, तत्कालीन सामाजिक पतन और यथार्थ दशा से ही प्रेरित है। इन तत्कालन सामाजिक परिस्थितियों का विस्तृत वर्णन द्वितीय परिच्छेद में किया जा चुका है। अब हम कतिपय सामाजिक आदर्शों का सूक्ष्म विवेचन कर लें। मर्यादा -

सामाजिकता का चरम विकास मर्यादा की अनिवार्य स्वीकृति है। अतः सामर्थ्यानुसार सम्पूर्ण मानव जाति को सामाजिक सेवा में सक्रिय बनाकर मर्यादा पालन हेतु ही भारतीय मनीषियों द्वारा चतुर्वर्ण का संघठन किया गया था किन्तु काल के कराल करों के थपेड़ों से वह वर्ण व्यवस्था एवं आश्रम प्रणाली छिन्न भिन्न होने लगी। परिणामतः मानव की सामाजिक स्थिति एवं उसकी आयु में भी निरन्तर हास होने लगा। प्रिय प्रवास एवं साकेत में इसी मर्यादा के खण्डहर भवन के जीर्णोद्धार का प्रयास है। प्रियप्रवासकार ने तो रास लीला में मर्यादा का परिचय दिया है। साकेत में तो स्वयं राम भी यही कह रहे हैं -

मैं आया जिससे बनी रहे मर्यादा बच जाय प्रलय से मिटे न जीवन सादा

सादा जीवन उच्च विचार -

यह "सादा जीवन उच्च विचार का आदर्श सामाजिक जीवन के सूख समृद्धि की एक कुजी हैजो आंग्ल सभ्यता के प्रखर शरों से आहत होकर अभयदान हेतु इनमत्तन सूधियों के आवन का अवलोकन कर रही है। सादा जीवन उच्च विचार वाले आदर्श को मानने वाली महाविभूतियों को न तो तुच्छ घन का आकर्षण ही सम्मोहित कर सकता है और न अन्य गहर्य

सद् आदर्शों से परिपूर्ण संस्कृति

डॉ. यशस्पति झा

प्रलोभन ही साकेत के राम तो स्वयं इस आदर्श को निर्देशित करने के लिए ही अवतरित हुए हैं

**मैं आर्यों का आदर्श बताने आया,
जन सम्मुख धन को तुच्छ जताने आया।**

प्रिय प्रवास में भी धन कोई आकर्षण का केन्द्र नहीं है। ब्रजवासियों का जीवन सादगी का प्रकाश स्तम्भ है जिसमें कृष्ण चिन्तन जैसे उच्च विचार समुज्ज्वलित है।

वर्ण व्यवस्था

प्रिय प्रवास और साकेत में वर्ण व्यवस्था को भी मान्यता प्राप्त है। साकेत में संकुचित वर्ण भावना नहीं है। डॉ. नगेन्द्र के शब्दों में प्राचीन वर्ण व्यवस्था का शुद्ध रूप मिलता है।" ब्राह्मण तभी तक अर्हनीय है जब तक कि वह आदर्शान्वित है। आदर्श से पतित होते हुए ही वह हेय हो जाता है। द्विजेता तब आततायिनी में कवि का यही कथन है। गुप्तजी जन्म जात गत संस्कारों में विश्वास करते हैं।

प्रिय प्रवास में भी वर्ण व्यवस्था का समादर किया जाता है यशोदा का ब्राह्मण में विश्वास ही इसका प्रमाण है।

आश्रम धर्म

प्रोत्साहन और प्रतिबन्ध द्वारा मानव जीवन के सम्यक विकास के लिए वर्ण व्यवस्था के समान ही भारतवर्ष में आश्रमों की प्रतिष्ठा हुई। गुप्त जी भी जीवन को साफल्य और समुचित विकास के लिए इस व्यवस्था को अत्यावश्यक मानते हैं। आश्रम-धर्म के व्यतिक्रम पर 'साकेत' में दशरथ की ग्लानि द्वारा कवि ने उसमें अपना ही विश्वास प्रकट किया है

**गृह भोग्य बने है वन स्पृही, बन योग्य हाय हम बने गृही
*हे विधे व्यतिक्रम यह तेरा किसलिए बता यह श्रम तेर
प्रिय प्रवास में भी कृष्ण सखा उद्भव यदि सन्यासी मान लिया जाए तो
आश्रम व्यवस्था का ग्रहण माना गया है।**

पारिवारिक सम्बन्ध

यौन सम्बन्ध में अंकुरित रक्त सम्बन्ध पर आधारित और एक भाव विचार तथा जीवन प्रणाली के सूत्र में दृढ़ता से सुगुम्फित एक विशेष व्यक्ति समूह, सामाजिक घटना या इकाई में लहलहाने वाला प्रेम कहलाता है घर अथवा परिवार को संगठित करने लिए पारिवारिक स्नेह भावना की अत्यन्त आवश्यकता होती है। पारिवारिक सदस्यों के पारस्परिक

सद् आदर्शों से परिपूर्ण संस्कृति

डॉ. यशस्पति झा

सम्बन्धी में भी आदर्श अपेक्षित है। प्रिय प्रवास में इन सम्बन्धों के स्पष्टिकरण का विशेष अवसर उपस्थित नहीं हुआ। युग कवि मैथिलीशरण गुप्त ने इस क्षेत्र में नेतृत्व किया है। प्रिय प्रवास में नन्द-यशोदा के घर की स्नेह पूर्ण सूनंर झाँकी प्रदर्शित है। वहाँ प्रणय वात्सल्य और श्रद्धा का वर्णन है।

सास बहू का सम्बन्ध -

गार्हस्थ्य जीवन की पूर्णता सास बहू के प्रेम पूर्ण सम्बन्धों पर ही निर्भर करती है। भारत में सास-बहू के बीच मनमुटाव के कारण निरन्तर गृह कलह होते रहते हैं। सासु बहुओं से पुत्रों की भांति स्नेह नहीं करती और बहुएँ सासुओं के लिए अपना बन्धन अनुभव करती है। साकेत मे सासू बहू परस्पर गृह कार्य करती है। दोनों प्रफुल्लित है

मी क्या लाऊँ ? कह कह कर पूछ रही थी रह रह कर सास चाहती थी जब जो देती थी उनके सब यो।।"

प्रिय प्रवास में सास बहू का अभाव है प्रिय प्रवास में भातृ प्रेम भी स्पष्ट नहीं हुआ।

भाई भाई का सम्बन्ध

साकेत मे बड़े भाई छोटे भाईयों से स्नेह करते हैं तो छोटे भाई बड़े भाई का आदर साकेत का छोटा भाई प्रतिदिन बड़े भाईयों को प्रणाम करता है। यथा

विदा होकर प्रिया से वीर लक्ष्मण

हुए नत राम के आगे उसी क्षण।

हृदय से राम ने उनको लगाया।

वात्सल्य एवं पति पत्नीगत आदर्श चारित्रगत आदर्शों में स्पष्ट हो चुके हैं।

अन्य सम्बन्ध

प्रिय प्रवास में भाई-बहन, नन्द-भाभी और देवर भाभी के सम्बन्ध का आदर्श भी स्थापित नहीं हुआ है। साकेत में राम को बहिन शान्ता भाइयों को

साकेत के राम लक्ष्मण एवं मेघनाद आदि भी मनवाचा कर्मणा एक पत्नीव्रत के धारण करने वाले है प्रिय प्रवास कार ने रीतिकालीन रंगीले कृष्ण के चरित्र का परिष्कार किया है राधा का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता। नंद यशोदा भी उदाहरण रूप में प्रस्तुत किए जा सकते हैं। संयुक्त परिवार

प्रिय प्रवास में संयुक्त परिवार प्रथा का भी चित्रण है। नन्द, यशोदा बलराम और कृष्णा को मिला कर परिवार में केवल

सद् आदर्शों से परिपूर्ण संस्कृति

डॉ. यशस्पति झा

चार आदमी है। कवि जानता है कि संयुक्त परिवार प्रथा भी अल्प व्यक्तियों वाले घरों में ही अधिक सफल हो पाती है। अतः उसने नन्द के इस सीमित किन्तु शान्तिपूर्ण और सुव्यवस्थित परिवार को ही चुना है। संयुक्त परिवार का आदर्श तो दशरथ परिवार का भी है किन्तु वहाँ नन्द परिवार जैसी शान्ति नहीं है। सीता को राम के साथ बन जाते हुए देख कर वृत्ति हेतु प्रवासी बने हुए अपने पति के साथ साथ चलने को ठान लेने वाली आधुनिक शिक्षिता हठीली-गली बालाओं का भी स्मरण हो जाता है। जो अपने वियोग दुःख को उत्पन्न न होने देने के कारण संयुक्त परिवार को समाप्त कर डालती है। संभवतः सीता और राम का दृष्टिकोण सामाजिक नहीं अपितु धार्मिक है। उनका सम्बन्ध प्रकृति और पुरुष का है।

शिष्टाचार का आदर्श

नीति का एक हलका स्वरूप शिष्टाचार के नाम से अभिहित किया जाता है। शिष्टाचार के द्वारा पारस्परिक सम्बन्धों में स्वच्छता बनी रहती है। गुरु सर्वत्र पूज्य होते हैं। वशिष्ठ का सभी आदर करते हैं। पिता का सम वयस्क एवं परिवार मुक्त होने के कारण राम सेवक सुमन्त्र को भी काका कहते हैं

सुमन्त्रागम समझ कर रुक गए थे,

अहा । काका, विनय से झुक गए थे।"

पर स्त्री से व्यवहार करते समय कैसा सीजन्य करना चाहिए इसका उल्लेख दो नगेन्द्र ने बड़ी खुबी से निषादराज गुह और सीता के वर्णन में किया है। पिता को तात शब्द से सम्बोधित किया है।

कहा तब राम ने हे तात क्या है।"

भाभियों को आर्या कहा जाता है।

आर्या को खाने आई वह गई कटाकर नासा कर्ण

पति पत्नी को भद्र, शुभे प्रिये आदि सम्बोधित करते हैं। पत्नी पति का नाम नहीं लेती। उर्मिला की अर्धचेतनावस्था में "अनभ्यस्त वाणी" पिक कह कर ही अवरुद्ध हो जाती है। वैसे भी एक भारतीय ललना के सामने पति का प्रसंग चलने पर मधुर संकोच करती है।" गोरे देवर श्याम उन्ही के ज्येष्ठ है में भारतीय तलनाओं के अनुरूप शिष्टाचार है। दूत के उत्तरीय समेटकर उत्तर देने में विनयशीलता है।"

श्रमदान का आदर्श

आधुनिक समाज में भारत की नारियों ने श्रमदान के आदर्श को भी आत्मसात् कर लिया है। राजपुत्रवधू सीता भी पौधों में

सद् आदर्शों से परिपूर्ण संस्कृति

डॉ. यशस्पति झा

पानी देती हुई देखी जाती है प्रिय प्रवास में राधा और कृष्ण लोक सेवा के माध्यम से इसी आदर्श को प्रस्तुत करते हैं।

मिल जुल कर रहने का आदर्श -

साकेत में सामाजिकों को परस्पर मिल जुल कर रहने का आदर्श उपस्थित किया गया है। कवि का कथन है

एक तक के विविध सुमनों से खिले ।

पीर जन रहते परस्पर है मिले।।

प्रिय प्रयास में भी गोप ग्वाल बाल सभी हिलमिल कर रहते हैं। एक दूसरे के लिए प्राणों को न्योछावर कर सकते हैं। कृष्ण समाज को रक्षा के लिए प्राणों को हथेली पर लिए फिरते हैं। कृष्ण में भी प्रजवासियों का ममत्व सन्निहित है। सारा समाज काम काज छोड़ कर अपने प्रिय नेता एवं उदार बन्धु के दर्शन के लिए दौड़ पड़ता है।

अन्य सामाजिक आदर्श

उक्त आदर्शों के अतिरिक्त साकेत में उर्मिला द्वारा चित्रकला का आदर्श साकेत नगरी की सुन्दरता में शिल्पकला का आदर्श पुत्र गत आदर्श प्रेम की मोठ पर विजय एवं प्रेम का आदर्श त्याग और कर्म का आदर्श नारी गौरव का आदर्श (चरित्रगत आदर्श वाले परिच्छेद में विस्तार से वर्णित है) आदि आदर्शों को भी गिना जा सकता है।

साकेत की ही भाँति प्रियप्रवास भी भारतीय सामाजिक आदर्शों का समुद्रघाटन करता है। श्रीकृष्ण ने अपने जीवन को बहुजन हित के लिए न्योछावर करने के लिए सदा प्रस्तुत होकर भारतीय समाज के प्रमुख नवयुवकों को सन्देश दिया है कि व्यक्ति का सुख समाज के सुख के लिए न्योछावर किया जाना चाहिए। श्रीकृष्ण द्वारा प्रेम पर कर्त्तव्य की विजय भी वासना के रंगीले विश्व से नवयुवकों को बच कर कर्त्तव्य के पालन करने में प्राथमिकता का आदर्श प्रस्तुत करती है ठीक ऐसा ही राम लक्ष्मण का आदर्श है। साकेतकार भी प्रियप्रवासकार के समान व्यष्टि है समष्टि के लिए का ही आह्वान करता है।

इस प्रकार निष्कर्ष कहा जा सकता है कि ये दोनों ही ग्रन्थ भारतीय संस्कृति, समाज, सभ्यता, धर्म, राजनीति आदि आदर्शों के प्रबल व्यवस्थापक है।

*व्याख्याता

व्याकरण

राजकीय शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय

अलवर (राज.)

सद् आदर्शों से परिपूर्ण संस्कृति

डॉ. यशस्पति झा

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. साकेत, अष्टम सर्ग पृ. 2th34
2. साकेत, अष्टम सर्ग, पृ. 234
3. साकेत एक अध्ययन, पृ. 81
4. साकेत, पृ. 22
5. आधुनिक हिन्दी कविता प्रेम और सौन्दर्य, डॉ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल, पृ 284, सं. 2015
6. साकेत, पृ. 133
7. साकेत, पृ. 73
8. साकेत. प्र. 198
9. रामचरित मानस और साकेत, परमलाल गुप्त, पृ. 46 प्र से 1961
10. आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी डॉ. शैल कुमारी, पृ. 160. प्र. सं.
11. साकेत, पृ. 69.
12. साकेत एक अध्ययन, डॉ. नगेन्द्र, पृ. 88-89, दशम संस्करण
13. साकेत, पृ. 54
14. वही, पृ. 278
15. वही, पृ. 247
16. वही, पृ. 106

सद् आदर्शों से परिपूर्ण संस्कृति

डॉ. यशस्पति झा